- प्रथम अध्याय -

उपेन्द्रनाथ अश्क-

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

"किसी भी साहित्यकार की गतिविधि जानने के लिए आवश्यक है कि उसके जीवन से परिचित हुआ जाय, क्यों कि 'जीवन और साहित्य' का अभिन्न संबंध है। कोई भी साहित्यकार कितना ही तटस्थ क्यों न हो, फिर भी साहित्य में उसके जीवन के कुछ न कुछ अंश आ ही जाते हैं। साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके साहित्य में निहित होता है, इसीलिए उसके साहित्य के मूल में पहुँचने के लिए पहले उसके जीवन में पहुँचने की आवश्यकता होती है।"१

एक मनुष्य के रुप में कोई भी लेखक अपनी पारिवारिक स्थितियों से अपने शैशवकाल में प्रभाव ग्रहण करता है । लेखक की माँ, उसके पिता, भाई-बहन, दादा - परदादा आदि सम्बन्धियों के माध्यम से वह अपनी सामाजिकता को आत्मगत करते हुए सामजिक वातावरण में अपने आपको अनुकूल बनाने की कोशिश करता है।

आजीवन सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति करनेवाले यथार्थवादी परम्परा के कथाकार उपेंद्रनाथ अश्क का जीवन और साहित्य इसी की मिसाल है।

१) बचपन

श्री उपेन्द्रनाथ अश्क का जन्म पंजाब प्रान्त के जालन्धर नामक नगर में १४ दिसंबर १९१० को एक मध्यवित्त ब्राह्मण परिवार में हुआ। अश्क छ: भाईयों में दूसरे थे। उनके पिता पं. माधोराम स्टेशन मास्टर थे। अश्क के पिता बडे मनमौजी और रंगीले आदमी थे। वे शराब तो पीते ही थे, बल्कि जुआ भी खेलते थे। कई बार जुए में सारा का सारा वेतन हार देते थे। फलस्वरुप अश्क जी का परिवार बडी कठिनाई से दिन गुजारता था। इसके विपरित उनकी माँ सीधी-सादी, धर्म-परायणा, पतिव्रता महिला थीं। "बचपन से ही अश्कजी का जीवन घटनापूर्ण रहा है। इन्हों ने अतीव कडवे प्याले भी पिये हैं और मीठे भी ,बाहुल्य भी देखा है और अभाव भी पाया है और तीव्र उपेक्षा भी।"२

इन तमाम विरोधाभासों के बावजूद अश्कजी के जीवन पर उनके माता पिता के चरित्र का गहरा प्रभाव पडा है। अश्कजी को माँ से लौह इच्छा-शक्ति एवं नैतिकता मिली थी और पिता से जीवन के अमूल्य सूत्र, जिन्हें वे अपनी ज़िन्दगी भर नहीं भूल पाये। उसी प्रेरणा से उन्हें ज़िन्दगी में कुछ कर गुजरने की शक्ति मिली। इसीलिए उनका कहना है कि "मुझे समझने और जानने की इच्छा रखनेवाले को मेरे माता और पिता को जानना होगा-विशेष कर मेरे पिता को। क्यों कि मैं उन्हीं का बनाया हुआ हूँ।"३

२) शिक्षा

अश्क जी बचपन में आठ साल तक अपने पिता के साथ विभिन्न स्टेशनों पर घूमते रहे। जब पिता का तबादला रिलीविंग में हुआ और वे कोयटा चले गये, तो उनकी माँ अपने छः बच्चों के साथ जालन्धर आई। माँ ने उन्हें घर पर काफी पढ़ा रखा था, इसलिए उन्हें जालन्धर के एंग्लो संस्कृत हाईस्कूल की प्राइमरी शाखा में सीधे तीसरी कक्षा में दखिल करा दिया गया। वहीं से १९२७ में उन्होंने मैट्रिक किया। वहीं के डी.ए.वी. कॉलेज से उन्होंने १९३१ में बी. ए. की डिग्री प्राप्त की। वे चाहते थे कि एम.ए. में दाखिल हो जाय, किन्तु बी. ए. करते ही जीविकोपार्जन की समस्या उनके सामने खड़ी हुई और वे नौकरी करने लगे।

१९३४ में वे फिर शिक्षा की तरफ मुड़े। उस समय तक उनकी शादी हो चुकी थी। "तब न रहने को ढंग की जगह थी, न पढ़ने लिखने को। न किताबों के लिए पैसे थे न फीस के लिए।"४ तमाम कठिनाईयों के बावजूद उन्होंने लॉ कालिज में प्रवेश लिया और १९३६ में अथक परिश्रम, सतत लगन एवं निष्ठा से उन्होंने डिस्टिंक्शन लेकर प्रथम श्रेणी में कानून पास किया। ७००

छात्रों में वे आठवें थे।

किन्तु इधर उन्होंने लॉ पास किया, उधर उनकी पत्नी, जिसके लिए उन्होंने यह सब किया था, लम्बी बीमारी के बाद चल बसी। अश्क जी ने कानून की किताबें बेच दी। कचहरी को तिलांजली दे दी और स्वतंत्र साहित्य सृजन में रत हो गये।

इन दिनों उन्होंने देशी-विदेशी पुस्तकों का गहन अध्ययन किया। उर्दू, पंजाबी, हिन्दी ये उनकी अधिकारिक भाषाएँ है ही, अंग्रेजी का भी साहित्य उन्होंने पढा। बंगाला, गुजराती तथा मराठी भाषाओं का भी उन्हें थोडा बहुत ज्ञान था। उनकी अर्धशती के अवसर पर श्रीमती महादेवी वर्मा ने ठीक कहा था, कि "पंजाबी अश्क की मातृभाषा है, उर्दू उनकी धातृभाषा है और हिन्दी उनकी धर्मभाषा है, जिस साहित्यिक को तीन तीन माताओं का स्नेह प्राप्त है, उसकी शक्ति अपरिमित है।"४

उनका निजी पुस्तकालय विशाल एवं देशी-विदेशी साहित्य से भरा पड़ा है। पहले आर्थिक अभाव में और बाद में समयाभाव के कारण उनके अध्ययन के मार्ग में बाधा पड़ी। बावजूद इसके उनका अध्ययन जारी था, जारी है और आखिरी दम तक जारी रहेगा।

३) विवाह

अश्क जी का पहला विवाह एक सरल किन्तु अशिक्षित ग्रामीण लडकी शीलादेवी के साथ १९३२ में हुआ। शीलादेवी सरल एवं शान्त स्वभाव की थी और तीन चार साल के साहचर्य के कारण वे उसे जी जानसे चाहने लगे थे। परन्तु अश्कजी लॉ के प्रथम वर्ष में ही थे कि शीलादेवी को यक्ष्मा ने ग्रस लिया। अपनी सारी कोशिशों के बावजूद भी वे उसको बचा नहीं सके। ११ दिसंबर १९३६ को शीलादेवी का देहांत हो गया। उनसे एकमात्र सन्तान श्री उमेश है। पत्नी

की मृत्यु से अश्कजी को गहरा आघात लगा। उनके जीवन के सुन्दर स्वप्न चूर-चूर हो गये और भावी ज़िन्दगी में बेचैनी की आग लग गयी।

चार वर्षोंतक उनकी ऐसी ही अवस्था रही। बाद में जैसा कि अश्कजी ने लिखा है, "पहले लाहौर में एक स्कैण्डल हुआ, फिर प्रीतनगर में और परेशान हो कर मैं ने अपने बडे भाई को लिखा कि कहीं मेरी सगाई कर दो।"६ उन्होंने एक जगह सगाई तय कर दी। बाद में अश्कजी ने सोचा कि बिना देखे-भाले सगाई करना ठीक नहीं होगा। उन्होंने इस सगाई को रोकने की कोशिश की, लेकिन उनके बडे भाई तैयार नहीं हुए। इसी बीच अश्कजी का सम्पर्क कौशल्याजी से हुआ। उन्होंने कौशल्याजी के सामने चुपचाप विवाह करने का प्रस्ताव रखा, जिससे की यह सगाई टूट जाय। पर कौशल्याजी चुपचाप शादी करने के पक्ष में नहीं थीं। इस प्रकार भारी अनिश्चय एवं अनचाही स्थिति में फरवरी १९४१ में अश्कजी का दुसरा विवाह मायादेवी के साथ सम्पन्न हुआ। उनसे अश्कजी को एक कन्या की प्राप्ति हुई। लेकिन यह विवाह सफल सिध्द नहीं हुआ और उन्होंने इस पत्नी से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया।

१२ सितंबर १९४१ में अश्कजी ने अपनी तीसरी एवं वर्तमान पत्नी कौशल्याजी से शादी कर ली। इन्हीं से अगस्त १९४५ में नीलाभ का जन्म हुआ।

कौशल्याजी ने अश्कजी के खातिर अपनी साहित्यिक प्रतिभा को दबा दिया और सच्ची संगिनी का परिचय दिया। अश्कजी १९४७ में यक्ष्मा के शिकार हो गये। कौशल्याजी उन्हे पंचगनी ले गयीं और बिना धबराये उनकी सेवा-शुश्रुषा में जुट गयी। अश्कजी ठीक होकर इलाहाबाद चले आये। वहाँ आवास की समस्या खडी हुई। तब कौशल्याजी ने बडे परिश्रमपूर्वक, अनवरत लगन से मकान खोज लिया। लेकिन आर्थिक स्थिती दयनीय हो चुकी थी। अश्कजी कुछ ज्यादा मेहनत नहीं कर सकते

थे। तभी कौशल्याजी ने प्रकाशन खोलने का निश्चय किया। १९४९ में उन्होंने सरकार से ऋण लेकर 'नीलाभ प्रकाशन' की स्थापना की। 'नीलाभ प्रकाशन' की आरम्भिक योजना में सिर्फ 'अश्क साहित्य' का प्रकाशन था। अब 'नीलाभ प्रकाशन' का क्षेत्र काफी बृहद् हो चुका है और वह अन्य लेखकों की महत्वपूर्ण कृतियों के प्रकाशन में सक्षम है। इसका श्रेय कौशल्याजी के अथक दृढ परिश्रम, दृढ विश्वास तथा सहयोग को ही देना पडेगा।

प्रसिध्द उर्दू-अंग्रेजी लेखक ख्वाजा अहमद अब्बास ने ठीक ही लिखा है, "कौशल्या अश्क की पत्नी है, मित्र है, संगिनी है, सलाहकार है, नर्स है, डॉक्टर है, मैनेजर है, प्रकाशक है- कहूँ कि उसकी दासी है, उसकी मालिक है।"७

आज इलाहाबाद में अश्कजी का एक भरा-पूरा परिवार है, बीबी है, बच्चे है, बच्चों के बच्चे है, बहुऐं है, नौकर-चाकर हैं। सारी सुख-सुविधाएँ हैं., लेकिन उनका साहित्य-संघर्ष जारी हैं। वे अब बाहर ज्यादा नहीं निकलते, वर्षों सिनेमा नहीं देखते और बाहर तेरह घण्टे जम कर काम करते रहते हैं।

४) जीवनसंघर्ष

पिता के मनमौजी स्वभाव एवं बडे भाई की लापरवाही के कारण अश्कजी को प्रारम्भिक जीवन से ही नौकरी करनी पड़ी। सर्वप्रथम अश्कजी ने अपने कालिज में ही अध्यापन कार्य शुरु किया। पर छ: महिने के अन्दर ही वे इस कार्य को छोड़कर लाहौर चले गये और उर्दू दैनिक 'भीष्म' के सम्पादन करते रहे। इस बीच सुप्रसिध्द कथाकार श्री सुदर्शन से उनका परिचय हो गया और उन्हीं के प्रयास से लाला लजपतराय द्वारा संचलित उर्दू दैनिक 'वन्दे मातरम्' में कथा-लेखक के रुप में नियुक्त हुए। लेकिन यहाँ अश्कजी को साहित्य-सृजन के लिए

पर्याप्त अवसर न मिलने के कारण उन्होंने 'वंदे मारतम्' से त्यागपत्र दे दिया। फिर 'वीर भारत' तथा 'भूचाल' साप्ताहिकों के सम्पादन पर कुछ दिनों तक काम करने के बाद अचानक त्यागपत्र दे कर वे घर लौट आये और १९३४ में उन्होंने लाहौर के लॉ कालिज में प्रवेश लिया।

यहाँ उन्हें कड़ी आर्थिक विपन्नता का सामना करना पड़ा। फिर भी अपने अथक परिश्रम से उन्होंने परिस्थितियों का डट कर मुकाबिला किया। जैसा कि उन्होंने लिखा है, "मै नें बेकारी के दिनों में कई तरह के काम किये . हैं- अखबार बेचे हैं, विज्ञापन लिखे हैं, झंडू फार्मेसी की लिस्टें बनायी हैं, 'मस्ताना जोगी' के लिए जड़ी-बूटियों पर लेख लिखे हैं और दो-एक बार डब्बी बाजार से थोक रुमाल खरीद कर, अनारकली के चौरस्ते में खड़े होकर और आवाज़ लगाकर फुटकल में बेचे हैं।"८

इस बीच उनकी पहली पत्नी का देहांत हो गया था और अश्कजी काफी अशान्ति की मनस्थिति में थे। सन १९३९ में शान्ति हेतु वे पंजाब के एक गांव 'प्रीतनगर' जाकर वहाँ के 'प्रीतलड़ी' के हिन्दी-उर्दू संस्करणों के सम्पादक हो गये। इन्हीं दिनों उनका दूसरा विवाह हो गया। किन्तु उन्हें इस विवाह से अशान्ति ही मिली और वे नौकरी छोड, प्रसिध्द उर्दू कथाकार कृष्णचन्द्र के बुलाने पर 'ऑल इण्डिया रेडिओ ' में आ गये। तीन वर्ष तक उन्होंने वहाँ 'हिन्दी परामर्शदाता तथा नाटककार' के रुप में कार्य किया। किन्तु वहाँ अधिकारियों द्वारा स्वाभिमान को ठेस लगने पर १९४४ में उन्होंने रेडिओ की नौकरी छोड दी।

फिर वे 'सैनिक समाचार' (दिल्ली) के हिन्दी संस्करण के सम्पादक हुए। छः महीने के भीतर ही वे फिल्मिस्तान के बुलावे पर बम्बई चले गये।

वहाँ उन्होंने 'मजदूर' और 'सफर' के सम्वाद लिखे, 'मजदूर' और 'आठ दिन' में अभिनय भी किया, लेकिन वहाँ के वातावरण में रुचि न लगनेपर उन्होंने फिल्मी दुनिया से अलग होने का फैसला किया। इन्हीं दिनों वे यक्ष्मा से ग्रस्त हो गये और उपचार के हेतु पंचगनी के सैनेटोरीयम में भरती हो गये। वहाँ उन्हे लगभग डेढ वर्ष तक रहना पड़ा। फिल्मों में जो रुपया जोडा था, सब बीमारी में खर्च हो गया। ऐसी स्थिति में उत्तर प्रदेश सरकार ने ५००० रु. का अनुदान दिया।

१९४८ में अश्कजी इलाहाबाद आ गये, जहाँ कौशल्याजी ने सरकार से ऋण लेकर 'नीलाभ प्रकाशन' की स्थापना की। इसके बाद अश्कजी को नौकरी के लिए भाग-दौड़ नहीं करनी पड़ी और उन्हें स्वतन्त्र साहित्य-सृजन करने का अवसर मिला। आरम्भिक दिनों में आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए किंचित स्वस्थ होने पर उन्हें प्रचार प्रसार के हेतु बहुत दौड़-धूप करनी पडी। परन्तु 'नीलाभ प्रकाशन' की स्थिति काफी सुदृढ हो जाने के बाद यह दौड़-धूप समाप्त हो गयी। जगदीशचन्द्र माथुर ने अश्कजी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए लिखा है-, "बहुत देखा है उन्होंने, बहुत भुगता है, बहुत परखा है, बहुत छीना है। छीना अधिक है, बैठे-बैठाये पाया कम है।"१

कठीन से कठीन स्थिति में भी उन्होंने अपना पथ प्रशस्त किया और तमाम चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी मंज़िल की ओर वे निरन्तर अग्रसर रहे। यही उनकी श्रम-साधना की सक्षमता है- शक्तिमत्ता भी है।

५) व्यक्तित्व

अश्कजी के व्यक्तित्व के अनेकानेक पहलू हैं। बिना उन सब को जाने उनका व्यक्तित्व अधूरा रह जाता है।

उनका चरित्र एक खुली हुई किताब है। वे जीवन में जितने बेतकल्लुफ

हैं, उतने ही फक्कड़। उनकी यह उन्मुक्तता कभी-कभी खटकने लगती है। पर बात ऐसी नहीं है। उनकी उन्मुक्तता, बेतकल्लुफी, उनका फक्कड़पन आधारभूत है, बनावटी नहीं। "जिसे हर कदम पर चीजों से जूझना पड़ा हो कि अगले क्षण का पता न हो और भारी अनिश्चय के बीच से जिसने अपना रास्ता बनाया हो, उस पर दो ही तरह की प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं। या तो वह संघर्षों की गम्भीर छाया मन में पैठ जाने दे या यह कि वह इन सब का मजाक उड़ा दे। अश्कजी ने दूसरा रास्ता अपनाया है, इसलिए सब कुछ समझ-बूझ कर वे एक व्यंग्य से उसे ग्रहण करते हैं।"१०

वेशभूषा में अश्कजी बड़े बेपरवाह हैं। वे हर प्रकार के लिबास पहनना पसन्द करते हैं। धोती-कुर्ता-जाकेट से लेकर सूट-बूट तक सभी प्रकार के लिबास उन्हे प्रिय हैं। उनका खाना-पीना बहुत सीधा-सादा और नियमित है।

चंचल प्रकृति अश्कजी के व्यक्तित्व का एक निराला पहलू है। बहुत देर तक गम्भीर बैठे रहना उनके लिए दुष्कर है। बातें करने का तो जैसे उन्हें रोग ही है। बातों में निमग्न ये सब कुछ भूल, आप से बाते करते ही रहेंगे-न भूख-प्यास की चिन्ता, न काम की। बातें करने में वे बहुत स्पष्टवादी हैं। अश्कजी की स्पष्टवादिता ने उनके शत्रु-मित्रों की संख्या बढ़ा दी है।

वे जिद्दी और क्रोधी भी कम नही हैं। जीवन से लेकर साहित्यिक क्षेत्र तक उनका यह रुप देखने को मिलेगा। उनके इस स्वभाव को देख कर कौशल्याजी लिखती हैं कि "चाणक्य का उत्तराधिकारी यदि कोई है, तो अश्कजी अपने आप ही को मानते हैं।"११

अश्कजी का प्रकृति-प्रेम बहुत ही गहरा एवं अनुपम है। उनका प्रकृति-प्रेम केवल उनके व्यक्तित्व तक ही सीमित नहीं, बल्कि समूचे अश्क साहित्य पर इसकी छाया स्पष्ट रुप से आच्छादित है। अश्कजी की लिखने की प्रेरणा में प्रकृति

के बदले हुए रंगों का बड़ा प्रभाव है।

अश्कजी स्वयं महत्वाकांक्षी और घोर आत्मविश्वासी व्यक्ति हैं। वे स्वाभिमानी हैं। अनाचारों के खिलाफ लड़ना, अधिकारों के लिए सदैव झगड़ना, गलत कार्य न करना, गलत आरोपों को न सहना उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। रोजी-रोटी या पैसे के कारण उन्होंने कभी भी अपने स्वाभिमान को नत नहीं होने दिया।

अश्कजी में ज़िन्दा-दिली कूट-कूट कर भरी हुई है। "उनमें अब भी बचपन है- चंचलता, शरारत, चुहलबाजी, छेडछाड करना, दूसरों को बना कर मजा लेना, लड़ाई-झगडा करना, बच्चों की तरह जिद करना, रुठना और मनना --"१२ उनके जिन्दादिली का प्रतीक है।

जीवन और जगत के प्रति उनकी गहरी आस्था है। प्रबल इच्छा-शक्ति, लगनशीलता के कारण कठीन से कठीन एवं संघर्षमय परिस्थिति में भी वे उससे मुँह मोड़नेवाले नहीं है। "रास्ता जितना ही बीहड़ होता है, अश्क के कदम उतनें ही मजबूत हो जाते हैं, ठोकरें उन्हे और भी प्रगतिशील बना देती हैं और प्रयास एवं प्राप्ति के इस अभियान के दौरान में जान पडता है कि बर्गसां की जीवन-शक्ति (Elan-vital) की बूटी उन्होंने चखी है। यह अपराजित जीवन-शक्ति ही अश्क को वह प्रखरता देती है, जिसके कारण उनका व्यक्तित्व गहरे मानो में दिलचस्प हो जाता है।"१३

६) कृतित्व

अश्कजी माँ सरस्वती की आराधना में लम्बी एवं सफल यात्रा तय कर चुके हैं। उन्होंने माँ सरस्वती की पावन मूर्ति की पूजा विभिन्न पुष्पों द्वारा की और कहानी, उपन्यास, लेख, संस्मरण, रेखाचित्र, आलोचना, नाटक, एकांकी, कविता, सम्पादन आदि के द्वारा आधुनिक युग में अपना अक्षय कीर्तिमान स्थापित कर लिया।

विद्यार्थी जीवन से ही अश्क की अनेकों कहानियाँ, उर्दू-हिन्दी

कवितायें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थीं, जो साहित्यिक दृष्टि से उच्च कोटी की थीं। यही कारण है कि प्रेमचन्द ने इन्हें हिन्दी लेखन का परामर्श दिया। वह आदर्शवाद का युग था। यही कारण है कि अश्क जहाँ यथार्थवादी हैं, वहीं आदर्शवादी भी नजर आते हैं। हिन्दी कथा साहित्य में यथार्थवादी सामाजिक स्वर, मनोवैज्ञानिक व्यापकता एवं गहराई लाने में अश्कजी पूर्णत: सफल हुए हैं। उनका मत है कि, "लेखक के लिए, विशेषकर यथार्थवादी लेखक के लिए कड़वे सत्य की अभिव्यक्ति ही एकमात्र मार्ग है, मैं यह मानता हूँ।"१४

वैसे तो अश्कजी ने थोडी बहुत हर वर्ग पर अपनी लेखनी की रोशनी फेंकी है, पर 'निम्न --मध्यवर्ग' ही उनकी रचना का मूल उत्स रहा है। उपन्यास हो या कहानी, नाटक हो या एकांकी, कविता हो या संस्मरण समूचा अश्क साहित्य 'निम्नमध्यवर्ग' के चित्रण से भरा पडा है। "यह ऐसा जटिल वर्ग है, जिसके हर सदस्य की गाँठे अलग अलग दिखती है। यह ऐसा वर्ग है, जैसे पारा, जिसे स्थिर करके परखना भी कठीन हों। यह एक ऐसा बेतुका वर्ग है, जिसका कोई नैतिक स्तर नहीं, एक व्यवसाय नहीं, एक जीवन नहीं, एक आचरण नहीं।"१५

पृष्ठभूमि में देखे तो अश्क साहित्य का महत्व हम सही-सही आँक सकतें हैं और उसका मूल्यांकन ठीक-ठीक कर सकते हैं। अश्क का आलोचक इस वर्ग के सामने आईना रखता है, अश्क का व्यंगकार उसकी विकृतियों की खिल्ली उडाता है, अश्क का कलाकार उसके प्रकाश और छाया को उभारता है।"१६

७) पुरस्कार, अभिनन्दन एवं विदेश यात्रा ===============================

समय समय पर केन्द्र तथा राज्य सरकारों ने उन्हें पुरस्कृत कर सन्मानित किया है। उनकी लगभग एक दर्जन पुस्तकें पुरस्कृत हो चुकी हैं, जिनमें 'साहब को जुकाम है', 'चरवाहे', 'सडकों पे ढले साये', 'सत्तर श्रेष्ठ

कहानियाँ', 'कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल', 'पत्थर-अल-पत्थर', 'शिकायतें और शिकायतें', 'बड़ी बड़ी आँखें', 'शहर में घूमता आईना', 'हिन्दी कहानियाँ और फैशन' उल्लेखनीय हैं।

पुरस्कार

१६६५ में 'संगीत नाटक अकादमी' द्वारा हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ नाटककार के रुप में अश्कजी पुरस्कृत हो चुके हैं। १९७२ में उनको 'नेहरू पुरस्कार' से सम्मानित किया गया और रूस जाने का निमन्त्रण भी मिला।

उनकी कई रचनाएँ भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुदित हो चुकी हैं। जिनमें 'गिरती दीवारें' के संक्षिप्त संस्करण 'चेतन' तथा नाटक 'अलग-अलग रास्तें' के रुसी अनुवाद का विशेष महत्व है। इस नाटक को अनेक बार 'मॉस्को टेलिविजन' पर प्रस्तुत किया जा चुका है।

समय-समयपर भारत तथा विदेशी सरकारों के आमन्त्रण पर अश्कजी देश-विदेश का दौरा करते रहे हैं। भारत सरकार के आमन्त्रण पर १९५८ में उन्होंने आंध्र प्रदेश का दौरा किया था। १९५२ में 'प्रगतशील लेखक संघ' के प्रयाग अधिवेशन के वे स्वागताध्यक्ष बनाये गये थे। १९६१ में 'असम हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के वार्षिक अधिवेशन के अध्यक्ष बने। सितम्बर १९५६ में रुस के विशेष निमन्त्रण पर मास्को में हो रहे 'कालिदास जयन्ती समारोह' में भाग लेने के लिए अश्कजी रुस गये।

१४ दिसम्बर १९६० को अश्कजी की पचासवीं वर्षगाँठ पर उनका अर्धशती-समारोह देश-विदेश में बडे ही धूमधाम से मनाया गया और उन्हें अभिनन्दित किया गया। प्रयाग में महादेवी वर्मा की अध्यक्षता में उनका 'अर्धशती समारोह' मनाया गया। इस अवसर पर उनकी जन्मभूमि जालन्धर की पत्रिका 'सप्तसिन्धु' ने 'अश्क

स्वर्ण जयंती विशेषांक' निकाला। उनकी इक्यानवीं वर्षगाँठ पर हिन्दी-उर्दू के श्रेष्ठ लेखकों द्वारा उनके बारे में लिखे गये संस्मरणों का संग्रह 'अश्क: एक रंगीन व्यक्तित्व' उन्हें भेंट किया गया, जो हिन्दी में अपनी तरह का एकमात्र अभिनन्दन ग्रन्थ है।

साहित्य-सृजन

==============

आधुनिक हिन्दी साहित्य में श्री उपेन्द्रनाथ अश्क का नाम विविध साहित्यिक विधाओं के क्षेत्र में अपनी रचनात्मक देन के लिए विशिष्टता रखता है। श्री उपेन्द्रनाथ अश्क सर्वतोन्मुखी, प्रतिभावान, हिन्दी के अग्रगण्य साहित्यकार, लब्ध प्रतिष्ठित कहानीकार, प्रख्यात उपन्यासकार एवं रंगमंचीय दृष्टि से सफल नाटक एवं एकांकीकार के रुप में बहुश्रुत हैं।

कारयत्री प्रतिभा इन्हें जन्मजात प्राप्त हुई थी। एक साहित्यिक के रुप में भी अपना परिचय इन्होंने साहित्य के विभिन्न अंगों का लेखन कर हिन्दी जगत को दिया। साहित्य की शायद ही ऐसी कोई विधा हो, जहाँ आपकी लेखनी का प्रवाह निर्बाध गति से न चला हो। आपने लेखन कार्य उर्दू से प्रारम्भ किया था परन्तु कुछ समय बाद हिन्दी लेखन प्रारम्भ किया, जो इतना प्रबल हो गया कि आज तक हिन्दी जगत को आपने अनेकों ग्रन्थ प्रदान किये। अश्क के सृजनात्मक साहित्य में उपन्यास, कहानी संग्रह, काव्य, नाटक, एकांकी, संस्मरण तथा रेखाचित्र आदि के रुप में बहुसंख्यक कृतियाँ उपलब्ध होती हैं।

<u>उपन्यासकार अश्क</u>

श्री उपेन्द्रनाथ अश्क के उपन्यास इस प्रकार हैं। -

१) सितारों के खेल

२) गिरती दीवारें

३) गर्म राख

४) बड़ी बड़ी आँखें

५) पत्थर-अल्-पत्थर

६) शहर में घूमता आईना

७) एक रात का नरक

८) एक नन्हीं किन्दिल

९) बांधो न नाव इक ठाँव आदि।

अश्क की प्रत्येक औपन्यासिक कृति का युग चेतना के प्रतिनिधित्व की दृष्टि से महत्व है।

'सितारों के खेल' में पौराणिक कथानक को आधुनिक रुप देकर प्रेम और विवाह की समस्या का चित्रण करने का प्रयास है, जो अत्यन्त सफल है। 'गिरती दीवारें' सोद्देश्यता एवं आधुनिक हिन्दी उपन्यास के प्रेमाख्यानक इतिहास में एक बेजोड प्रवर्तक कृति के रुप में सम्मान प्राप्त कर रही है। इस बृहद् उपन्यास में सामाजिक कुरीतियाँ, बेजोड वैवाहिक समस्याओं, नववर्ग की महत्वाकांक्षाओं, एंव साहित्यकारों के प्रति अन्याय के चित्रण के साथ प्रणय के विविध रुपों का प्रतिस्थापन प्राप्त होता है।

'गर्म राख' इस उपन्यास में विभिन्न वर्गीय चरित्रों, प्रणय के वास्तविक स्वरुप एवं दमित कुण्ठाओं का सफल चित्रण प्राप्त होता है। स्त्रियों की भावुकता एवं प्रेम के असफल हो जाने पर अपनाये गये अनमेल साथी तथा जीवन से पलायन करनेवालों पर व्यंग्य के साथ उनके प्रति सही न्याय की माँग का स्वर हम पाते हैं।

'बड़ी बड़ी आँखें' में प्रणय के भावोंका सूक्ष्म, प्रेरणादायक,

स्वस्थ, मार्मिक, कलापूर्ण एवं प्रभावशाली रुप प्रस्तुत है। केंद्रीय सरकारने इस उत्तम कृति को दो हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

'पत्थर-अल्-पत्थर' तथा 'शहर में घूमता आईना' भी उत्कृष्ट औपन्यासिक कृतियाँ हैं। कथानक के सुगठन, काश्मीरी श्रमिकों की वास्तविक दशा तथा उनके भाग्यवादी व्यवहार का दर्शन इस कृति में देखा जा सकता है। 'शहर में घूमता आईना' के पात्र पूर्व कृति 'गिरती दीवारें' के ही हैं। अपने उद्देश्य, प्राणवान चरित्र, वातावरण तथा स्थानीय चित्रण की दृष्टि से कृति का अपना विशिष्ट महत्व है।

'एक रात का नरक' इस पहले लघु उपन्यास में अश्कजी नें शिमला के एक पहाडी रियासत के वार्षिक मेले के रंग बिरंगे आकर्षण, उस रियासत की वास्तविक दशा तथा शासकों कें मनमाने अत्याचारोंका वर्णन किया है।

आपका 'एक नन्हीं किन्दील' यह उपन्यास, 'गिरती दीवारें' उपन्यास की तीसरी कड़ी है, तो 'बाँधो न नाव इस ठाँव' उपन्यास इसी उपन्यास की चौथी कड़ी है। इन दोनों उपन्यासों में अश्क ने लाहौर के मध्य वर्गीय समाज का गहरा चित्रण किया है। मध्य वर्गीय युवक नायक चेतन के बाहरी जगत के संघर्ष के साथ साथ आन्तरिक द्वंद्व, कुण्ठाएँ और तनावों का सफल चित्रण है।

इसके साथ आप की 'निमिषा', 'तूफान से पहले', 'तूफानी लहरों में हँसता माँझी' आदि रचनाएँ भी प्रकाशित हो चुकी है। 'गर्म राख' उपन्यास का संक्षिप्त संस्करण 'संघर्ष का सत्य' नाम से प्रकाशित हो चुका है।

अस्तु, हम यह कह सकते है कि, अश्क की औपन्यासिक कृतियों का महत्व भी वस्तु, शिल्प, मौलिकता और वर्गीय चेतना की उत्कृष्टता की दृष्टि से आधुनिक

हिन्दी उपन्यास साहित्य के इतिहास में प्रवर्तक कृतियों के रूप में ऊँचे स्थान पर है।

<u>नाटककार अश्क</u>

अश्क जी के निम्नलिखित नाटक प्रकाशित हो चुके है :-

१) जय पराजय

२) स्वर्ग की झलक

३) छठा बेटा

४) भंवर

५) कैद और उडान

६) आदि मार्ग (यही बाद में 'अलग अलग रास्ते' नाम से प्रकाशित किया गया।)

७) पैंतरे

८) अंजो दीदी

'जय पराजय' अश्क का पहला नाटक है। यह उनका एकमात्र ऐतिहासिक नाटक है। इस नाटक में यदि मध्यकालीन भारतीय राजपूत-जीवन की एक आदर्शवादी झाँकी है, तो साथ ही साथ वर्तमान की सजग दृष्टि से उस समय के हठी और सनकी सामन्ती जीवन की प्रच्छन्न आलोचना भी है। उनके बाकी सभी नाटक सामाजिक हैं और वर्तमान जीवन की यथार्थ समस्याओं से सम्बन्धित हैं। अश्क इस यथार्थवादी शैली के जौहरी हैं और इस शैली में उन्होंने कुछ बडे ही उच्चकोटि के नाटक हिन्दी को दिये हैं।

अश्क का 'स्वर्ग की झलक', 'छठा बेटा', 'कैद', 'उडान', 'अलग अलग रास्ते', 'भंवर', अंजो दीदी' और 'पैंतरे' वर्तमान जीवन की समस्याओं को यथार्थवादी अथवा प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत करते हैं। 'कैद' और 'उडान' नारी जीवन की दो समस्याओं के प्रतीक हैं। 'कैद' में अवांछित पती के साथ दाम्पत्य जीवन बिताते हुए अप्पी की जिंदगी एक घुटन और मर्यादा की शृंखला में कैद है। मन

उसका उड़ उड़ कर दिलीप के चारों ओर मंड़राता है। 'उडान' में स्त्री पुरुष के सम्बन्धों का समाधान है। लेखक ने संकेतसे स्पष्ट कर दिया है कि, आधुनिक नारी न तो पूजा की सामग्री बनना चाहती है, न संभोग की वस्तु और न सम्पत्ति, वह बनाना चाहती है केवल संगिनी।

'स्वर्ग की झलक' आधुनिक नारी पर एक सामाजिक व्यंग्य है। 'छठा बेटा' वर्तमान समाज के मध्य वर्गीय परिवारों के स्वार्थी सम्बन्धों पर कठोर, किन्तु हास्यपूर्ण व्यंग्य का प्रहार है। 'अलग अलग रास्ते' में विवाह की समस्या अपनी सारी उलझनों के साथ विद्यमान है। अपने इस नाटक में अश्क ने मध्य वर्गीय धारणाओं पर बडे जोरदार प्रहार किये हैं और जहाँ यथार्थ स्थिति का चित्रण किया है, वहाँ आधुनिक नारी के मार्ग का निर्देश भी किया है। इस नाटक में अपूर्व द्वंद्व, नाटकीयता और वेदना है। 'अंजो दीदी' में अश्क ने सनक की खिल्ली उडाई है और निर्देश किया है कि माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार जीवन पथ पर बढने दें, व्यर्थ के दमन से काम न लें और अपनी कुण्ठाओं को उन पर न लादें।

'पैंतरे' में फिल्मी जीवन की हास्य-व्यंग भरी झलक है लेकिन जैसा कि एक आलोचकने लिखा है, 'इसके अन्तर में बडी ही गहरी और दारुण ट्रेजिडी छिपी है।' 'भंवर' एक आधुनिका की कुण्ठा का अपूर्व चित्रण प्रस्तुत करता है और चरित्र चित्रण की दृष्टि से यह बडा ही सफल नाटक है।

इसके साथ ही अश्कजी के 'आदर्श और यथार्थ', ' लौटता हुआ दिन' आदि नाट्य-कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

एकांकीकार अश्क

अश्क के एकांकी भारतीय समाज के अध्ययन,, स्वानुभव तथा प्रतिभा की सुषमा से पूर्ण तथा पाश्चात्य टेकनीक से प्रभावित हैं। न केवल आप ने हिन्दी एकांकी को पाश्चात्य टेकनीक से पेष्टित किया, वरन् उसमें आधुनिक भारतीय समस्याओं का मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रतिपादन कर साहित्य का महत्वपूर्ण अंग बनाया है।

अश्क की एकांकियों में यथार्थवाद की ठोस अनुभूतियाँ, मानसिक भावों का सूक्ष्म विश्लेषण तथा अन्तर्द्वंद्व का पर्याप्त निदर्शन है। उनमें रुढिवादिता से हताश मध्य वर्ग के क्रंदन, प्रेम, घृणा, आनन्द, विषाद, संयोग, वियोग के अनेक पहलू अंकित किए गये हैं।

अश्क की इन एकांकियों में समाज की परंपराओं के प्रति क्रान्तिकारी रुप प्रकट हुआ है। 'पापी' में सास का बहू पर अत्याचार, 'देवताओं की छाया' में एक अभावग्रस्त, सामाजिक चक्की में पिसनेवाली मुस्लिम युवती की जीवन झाँकी है। 'जोंक' में आधुनिक अतिथियों पर व्यंग है। 'अधिकार का रक्षक' में सामाजिक कार्यकर्ताओं की धोखेबाजी, 'विवाह के दिन' में पुरानी वैवाहिक पध्दति पर एक व्यंग्य है। 'क्रासवर्ड पहेली' में आधुनिक शिक्षित युवकों की कामचोर प्रवृत्ति, 'आपस का समझौता' में डाक्टरों की चालबाजियाँ, झूठ पर व्यंग्य है। 'तूफान से पहले' सांप्रदायिक झगडों का सजीव चित्र है। 'वेश्या प्रेम' में अपमान के प्रतिशोध का अध्ययन है। 'तौलिये' में तकल्लुफ और बाह्य प्रदर्शन की प्रवृत्ति पर आघात, तो 'पक्का गाना' में भारतीय थिएटर, रेडिओ तथा फिल्म जगत की आलोचना की गयी है।

अश्क ने कुछ सांकेतिक और प्रतीकात्मक एकांकी भी लिखे हैं। 'चरवाहे', 'मैमूना', 'चुम्बक', 'चिलमन', 'खिडकी', 'चमत्कार', ' सूखी डाली' इत्यादि का महत्व

उनके संकेतों या प्रतीकों मे है, जो हिन्दी एकांकी मे सर्वथा नवीन प्रयोग है और जिसका सूत्रपात अश्क ने किया है। 'छठा बेटा' एक फैन्टेसी है।

अश्क ने मानव चरित्र का गहरा अध्ययन किया है और पात्रों के मनोविज्ञान पर आपकी दृष्टि आधिक रही है। 'आदि मार्ग', 'भंवर' इत्यादि एकांकियों में मनोवैज्ञानिक गहराई दर्शनीय है। चरित्रगत जटिलताओं, पात्रों को व्यक्तिगत विशेषताओं, त्रुटियों, चरित्र की गुत्थियों तथा भावनाओं का कुशल मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इनमें हुआ है। इनकी 'पर्दा उठाओ! पर्दा गिराओ!' 'बतसिया', 'सयाना मालिक', 'कहसा साब! कइसी आया', 'कस्बे के क्रिकेट क्लब का उदघाटन', 'मस्केबाजों का स्वर्ग' ये एकांकी व्यर्थ हास्य के वाहक नहीं हैं, प्रत्युत इनमें सामाजिक सत्य द्वारा प्राप्त वह कसक है, जो धीरे धीरे असर करती है। इनमें वर्तमान समाज की अनेक समस्याओं को यथार्थवादी रुप में प्रस्तुत किया गया है।

इन एकांकियों मे अश्क को अतिरंजना शैली का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं पडती। उनके मजाक स्थूल नहीं हैं, उनकी परिस्थितियाँ सरकस की कलाबाजियां नहीं है। उनकी पैनी दृष्टि दैनिक जीवन में ही सामग्री खोज निकालती है। इनके एकांकी सूक्ष्म, संयत और मार्मिक हैं।

कहानीकार अश्क

अश्क ने अपनी कहानियों में समाज और व्यक्ति दोनों का चित्रण किया है। समाज के चित्रण में उनका दृष्टिकोण सर्वत्र आलोचनात्मक रहा है और व्यक्ति के चित्रण में भी।

अश्क ने हास्य व्यंग्य की बहुत सी कहानियाँ लिखी हैं। बयालीस कहानियों का संग्रह 'छींटे' एवं 'रोबदाब' आदि प्रतिनिधि संग्रह हैं। इनमें जो

पुरानी कहानियाँ हैं, उनमें अंतर्निहित हास्य व्यंग स्थूल है, परंतु नयी कहानियों में यही सूक्ष्म हो गया है। उनकी इन हास्य तथा व्यंग्य प्रधान कहानियों द्वारा समकालीन समाज की आलोचना तथा व्यक्ति के मनोविज्ञान की व्याख्या का सुंदर प्रयास किया गया है। इन कहानियों की विषय वस्तु सामाजिक जीवन की अनेकरुपता तथा व्यक्ति की मन:स्थिति रही है।

'जुदाई की शाम का गीत' अश्क की रोमानी किंतु यथार्थवादी कहानियों का संग्रह है। प्रकाशक ने स्वयं कहा है,"अधिकांश कहानियाँ उन दिनों की याद है, जब अश्कजी की लेखनी के रोमानी प्रवाह में यथार्थवादी शैली के सम विषम उपलखंड न आये थे और उनमें बहती सी नदी का प्रवाह और आकाश में हवा के पंखों पर तैरने वाले पक्षियों के तरारों की अनायासता थी।"१७

'बैंगन का पौधा' इस पुस्तक में वे कहानियाँ संग्रहीत हैं, जिन्हें उन्होंने अपने लेखन काल के आरंभ में लिखी थीं। इन कहानियों में अश्कजी की नयी प्रतिभा का आकर्षण नेत्रगत होता है।

'अश्क की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ' और 'सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ' इन संग्रहों में अश्क की सर्वाधिक लोकप्रिय कहानियाँ संकलित की गयी है। 'निशानियाँ' कहानी संग्रह में अधिकांश प्रेम कहानियाँ संग्रहीत हैं। इन प्रेमकहानियों में समाज के विभिन्न रुपों का आकर्षक वर्णन किया है। इन कहानियों मे आदर्श और यथार्थ के विविध रुपों की झांकी मिलती है। सामाजिक जीवन की साधारण समस्याओं का चित्रण करते हुए इनमें आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की परंपरा की पुष्टि की गई है। इसी प्रकार की कहानियाँ अश्कजी की 'दो धारा' कहानी संग्रह में भी देखी जा सकती हैं।

अश्कजी की 'कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल' इस संग्रह की कहानियों मे काश्मीर के वातावरण, परिवेश एवं दरिद्रता का वर्णन है। काश्मीर की

जानकारी पुस्तक प्रणयन की प्रेरणा सी लगती है। इसमें अनुभूति की गहराई के चित्रों का प्रदर्शन हुआ है।

अश्कजी के 'आकाशचारी' कहानी संग्रह की कुछ कहानियाँ हास्य-व्यंगमय हैं। कुछ कहानियों के भाव गहरे एवं संश्लिष्ट भी हैं। शिल्प, शैली, कथावस्तु एवं बनावट की दृष्टि से इन कहानियों में पर्याप्त वैविध्य पाया जाता है। 'काले साहब' कहानी संग्रह में अश्क की नई, पुरानी कहानियाँ एवं संस्मरण संकलित हैं। इस संग्रह में विभिन्न रसों का परिपाक दिखाई देता है। इनमें 'काश्मिरी लाल अश्क' एवं 'अइडी चूक भूतना' ये दो संस्मरण हैं।

'पिंजरा' संग्रह की कहानियों में भावुकता भरी कटुता दिखाई देती हैं, जो सीधी हृदय को चीरती चली जाती हैं। कहानियाँ सरल, सरस एवं सामाजिक हैं। मनोरंजकता इन कहानियों का विशेष गुण हैं।

'पलंग ' संग्रह की कहानियाँ कथाकार की प्रौढ प्रतिभा की पूरी प्रांजलता की द्योतक है। कहानियों का शिल्प एवं वस्तु दोनों पुष्ट है। इस संग्रह की सभी कहानियाँ लेखक की अन्य उच्च कोटि की कहानियों के समकक्ष रखी जा सकती हैं। सभी कहानियाँ तत्वपूर्ण सोद्देश्य हैं। कहानियों का मुख्य स्वर सैक्स का स्वर है। इस संग्रह में संग्रहीत कई कहानियाँ उनके 'वासना के स्वर' कहानी संग्रह में संकलित हैं।

अश्कजी के उपर्युक्त कहानी संग्रहों से कुछ कहानियाँ चुनकर अन्य कुछ कहानी संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। उनके नाम है 'उबाल तथा अन्य कहानियाँ', 'मेरी प्रिय कहानियाँ', 'अश्क साहित्यधारा-चौतीस, कहानियाँ' आदि।

कवि अश्क

अश्क छायावाद काल के उत्कर्ष से लेकर आधुनिक काल की विभिन्न

प्रवृत्तियों के बीच काव्य रचना करते रहे हैं। 'विदा' उनकी पहली हिन्दी कविता है। अब तक उनके निम्नलिखित काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

१) प्रात - प्रदीप

२) ऊर्म्मियाँ

३) दीप जलेगा

४) बरगद की बेटी

५) चाँदनी रात और अजगर

६) सडकों पे ढले साये

७) खोया हुआ प्रभामण्डल

८) अदृश्य नदी

'दीप जलेगा' काव्य संग्रह में 'प्रात-प्रदीप', 'उर्म्मियाँ' तथा 'दीप जलेगा' तक तीन काव्य रचनाएँ संकलित हैं। 'प्रात-प्रदीप' में ऐसी कविताएं संकलित हैं, जो उन्होंने अपनी पहली पत्नी की मृत्यु से संवेदित एवं दु:खी होकर लिखी हैं। इन कविताओं में कवि की वेदना एवं तिलमिला देनेवाली कसमसाहट और विवशता मुखर हो उठी है। 'ऊर्म्मियाँ' में भी वही गहरा विषाद एवं निराशा का भाव अभिव्यक्त हुआ है। संसार की कठोर वास्तविकता से जकड़ा हुआ उनका हृदय अपनी स्मृतियों और भावनाओं को ले कर 'उर्म्मियाँ' में लहराया है। 'दीप जलेगा' संग्रह के अंत में संकलित एक स्वतंत्र खंडकाव्य है, जो अश्क की काव्यधारा के नये संकेत का द्योतक है। इस लम्बी कविता के सृजन के पीछे कवि के जीवन की एक व्यक्तिगत घटना निहित है। इसमें एक ऐसे संघर्ष-रत व्यक्ति के अन्तर्विचारों का चित्रण किया है, जो मृत्यु के सामने सिंह - सा खड़ा उसे चुनौती दे रहा है और अपनी पत्नी को अपने बाद उससे जूझते हुए आगे बढ़ने का संदेश देता है।

'बरगाद की बेटी' अश्कजी का दूसरा खण्ड काव्य है। यह जमींदारी प्रथा तथा उसके शोषण से पीडित बंजारों की कथा है, जिसमें शोषण, उत्पीडन, वर्ग-विषमता और वर्ग-संघर्ष के विरुध्द एक कर्कश आवाज़ है और यह कवि की लेखनी से उसकी निजी अनुभूति से सशक्त चित्रित हुई है। इस काव्य में अश्कजी की प्रगतशीलता स्पष्ट झलकती है, किंतु इसमें कहीं भी क्रान्ति का स्वर नहीं है।

'चाँदनी रात और अजगर' अश्कजी का तीसरा खण्ड-काव्य है, इसके लिखने के पीछे प्रसिध्द कथाकार यशपाल तथा उनकी पत्नी के जीवन-गत प्रबल संघर्ष की प्रेरणा थी। साथ ही कवि के निजी संघर्ष, उसके आसपास के मजदूरों, प्रेस कर्मचारियों तथा श्रमिकों के घोर संघर्षका भी गहरा प्रभाव था। इस काव्य में व्यापक वर्ग-वैषम्य और सामाजिक अंतर्विरोधों को व्यक्ति के मानसिक उहापोह के माध्यम से व्यक्त करने में कवि सफल रहा है। इसमें भी उनका प्रगतिवादी दृष्टिकोण स्पष्ट है, किन्तु वे इसमें सैध्दान्तिक नारेबाजी या कोरी यथार्थता का डंका नहीं पीटते, बल्कि निजी अनुभवों को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रख कर सही सही अभिव्यक्ति देते हैं।

'सडकों पे ढले साये' इस संग्रह की संपूर्ण कविताओं में कवि अश्कजी ने अपनी निजी अनुभूतियों को समष्टिपरक बनाकर अभिव्यक्ति दी है। इस काव्य संग्रह में स्वातन्त्र्योत्तर आधुनिक काव्यधारा की सभी प्रमुख प्रवृत्तियां विद्यमान हैं। इन कविताओं में सांकेतिकता और प्रतीकात्मकता है। यहाँ कवि के अकेलेपन की उदासी की अभिव्यक्ति है, प्रकृति के रम्य चित्रों की अभिव्यक्ति है, वहाँ कवि की दृष्टि जीवन-जगत की ओर भी है।

'खोया हुआ प्रभामण्डल' इस संग्रह में कवि का व्यक्तिवादी स्वर कटु-से-कटुतर हो गया है। स्वतंत्रता के बाद सामाजिक सम्बन्धों, विकसनशील

स्थितियों और विश्वासों का जो महापतन हुआ है, उससे कवि का मन-मस्तिष्क उद्वेलित हो उठा और उसका आक्रोश, उत्तेजना, व्यंग्य इन कविताओं में मुखरित हो उठा है।

'अदृष्य नदी' इस कविता संग्रह के पहले खंड में ऐसी कविताएं हैं जिनकी पृष्ठभूमि राजनीति है। इनमें अश्क ने चुनावों, दंगों के बदलते रुपों को तीखे शब्दों में अभिव्यक्त किया है।

दूसरे खण्ड में व्यक्तिगत कविताएं हैं, जिनमें कवि की गहरी सम्वेदनात्मकता व्यक्त हुई है। तीसरे खंड में नयी पुरानी ग़ज़लें हैं, जो इस बात की साक्षी है कि इस विधा पर भी अश्क की पकड़ ढीली नहीं हुई।

अश्कजी की अन्य रचनाएँ

अश्कजी की कई सम्पादित और अनुवादित रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं तथा कई निबन्ध, लेख, पत्र, डायरी और विचार-ग्रन्थ भी प्रकाशित हो चुके हैं, जिनकी सूची इस प्रबन्ध के अंत में दी गयी है।

!-!-!-!-!-!-!-!-!-!-!-!-!

संदर्भ :

१) प्रतापनारायण मिश्र :- जीवन और साहित्य -
डा.सुरेशचंद्र शुक्ल, -- पृ. १

२) दो धारा :- कौशल्या अश्क: -- पृ. २७

३) कहानी के इर्द - गिर्द :- उपेंद्रनाथ अश्क. -- पृ. १११

४) कुछ दूसरों के लिए :- उपेंद्रनाथ अश्क. -- पृ. १८३

५) अर्धशती प्रसंग (सुरेंद्र पाल)

अश्क: एक रंगीन व्यक्तित्व -- पृ. २६०

६) ज्यादा अपनी, कम पराई :- अश्क -- पृ. १६४

७) अश्क: एक रंगीन व्यक्तित्व (सं. कौशल्या अश्क)
- ख्वाजा अहंमद अब्बास -- पृ. १०२

८) कुछ दूसरों के लिए :- उपेंद्रनाथ अश्क -- पृ. १२१

९) अश्क: एक रंगीन व्यक्तित्व :- (सं. कौशल्या अश्क)
- जगदीशचंद्र माथुर -- पृ. ८०

१०) अश्क : एक रंगीन व्यक्तित्व (सं. कौशल्या अश्क)
- गिरिजाकुमार माथुर -- पृ. १२०

११) शिकायतें और शिकायतें :- कौशल्या अश्क -- पृ. ३७

१२) अश्क : एक रंगीन व्यक्तित्व :- (सं. कौशल्या अश्क) -- पृ. १६७

१३) अश्क: एक रंगीन व्यक्तित्व :-(सं.कौशल्या अश्क)
- भैरवप्रसाद गुप्त. -- पृ. ७२

१४) हिंदी कहानियाँ और फैशन :- उपेंद्रनाथ अश्क -- पृ. ८

१५) पत्थर-अल्-पत्थर :- (भूमिका) भैरवप्रसाद गुप्त -- पृ. २१
१६) वही " -- पृ. २१
१७) जुदाई की शाम का गीत :- विज्ञापन : उपेंद्रनाथ अश्क

* * * * * * * * *